卐 ।। श्री हरि: ।। 卐

सन्मार्ग

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै नमोऽस्तुरुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तुचन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः

बंगाल से प्रकाशित पू
सर्वाधिक प्रसारित

1 न
कार्तिक शुक्लपक्ष पंचमी 5, वि
वर्ष 74, अंक 20
मूल्य 4.00

www.sa

दिल्ली पब्लिक स्कूल, जोका

यह किसने सोचा था कि हरियाणा प्रान्त के भिवानी जिले के ढ़िगावा मंडी गांव से निकला एक शख्स सुदूर कोलकाता एवं सिलीगुड़ी में कामयाबी की मिसाल स्थापित करेगा । किराना का व्यवसाय, लोहे का व्यापार से लेकर शिक्षण संस्थान के प्रमुख की यात्रा श्री रामबिलास जी अग्रवाल के लिये अत्यंत संघर्षमय एवं रोचक रही है। दिल्ली पब्लिक स्कूल, जोका के अध्यक्ष के रूप में वह अपना कार्यभार बखूबी निभा रहे है । कोलकाता में हरियाणा प्रवासियों में उनका एक गरिमामय स्थान है।

डी.पी.एस जोका, साउथ कोलकाता अब अपने २०२०-२१ के शैक्षणिक सत्र में प्रवेश कर चुका है, इस उपलक्ष्य पर मैं अपने सभी शिक्षकों, अन्य स्टाफ सदस्य तथा सभी अभिभावक को दसवीं के बोर्ड परीक्षा २०१९ के सराहनीय परिणाम की बधाई देना चाहुँगी । सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लगातार मेहनत और लगन ने ही विद्यालय को शैक्षणिक सफलता के शिखर पर पहुँचाया है । हम माननीय रामविलास अग्रवाल की अध्यक्षता में चल रहे हमारे मैनेजमेंट, बिद्या भारती फाउन्डेशन तथा छात्र-छात्राओं के अभिभावक के योगदान को भी नज़रअंदाज नहीं कर सकतें क्योंकि उनके विश्वास और सहयोग के कारण ही हम विद्यार्थियों को स्वस्थ परिवेश दे सके हैं ताकि वे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

जैसा कि हम जानते हैं विद्यालय अब केवल शिक्षा का ही केंद्र नहीं रह गया इसीलिए हम न केवल किताबी शिक्षा बल्कि चरित्र निर्माण तथा आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा प्रदान करते हैं । हर एक बच्चे में कोइ न कोइ गुण अवश्य छिपा रहता है और हम हर एक बच्चे के इन्हीं गुणों की पहचान कर उन्हें, उनके लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायता करते हैं साथ ही साथ राष्ट्र और मानव की सेवा की सीख देते हैं । इसमे मुख्य भूमिका निभाते हैं शारीरिक शिक्षा, खेल-कूद तथा सहपाठ्यक्रम गतिविधियों का, जो मनोरंजक कक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों में नेतृत्व करने के गुण को विकसित करता है।

आज विद्यार्थियों में नाम और ख्याति उपलब्ध करने की प्रतिस्पर्धा लगी रहती है जिसके कारण उनका जीवन तनावग्रस्त बन गया है और इसी ख्याति की उपलब्धि न होने पर वे मानसिक रूप से टूट जाते हैं। इसीलिए हम शिक्षक विद्यालयों में तथा अभिभावक घर में हमेशा उन्हें यह सीख देते हैं कि असफलता में ही सफलता छिपी हुई है तथा हमारे धैर्य, हिम्मत, विशवास और प्रयत्न के माध्यम से ही हम इन परेशानियों और

रितुपर्णा चटर्जी, प्रिंसिपल

असफलताओं से बाहर निकल सकते हैं । यदि विद्यार्थियों में हम आत्मविश्वास के इस बीज को बाल्यावस्था में ही बो सकें तो विद्यार्थी स्वयं ही अपने भाग्य निर्माता बन सकेंगे और सफलता के शिखर तक पहुँच सकेंगे।